सुसमाचार और राज्य

सुसमाचार और राज्य: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना।
II. सुसमाचार:
   क. सुसमाचार का आरम्भ।
   ख. सुसमाचार का केन्द्र।
   ग. सुसमाचार का अन्त।

कक्षा #२:

II. सुसमाचार:
   ग. सुसमाचार का अन्त (जारी।)।

कक्षा #३:

III. परमेश्वर का राज्य:
   क. परमेश्वर के राज्य की प्रस्तावना।
   ख. "परमेश्वर का" कहना आवश्यक है।
   ग. दो राज्यों की तुलना।
   घ. यीशु और परमेश्वर का राज्य।
   ङ. परमेश्वर का राज्य क्या है?
   च. परमेश्वर का राज्य कब है?
   छ. परमेश्वर का राज्य और सुसमाचार।

कक्षा #४:

III. परमेश्वर का राज्य:
   छ. परमेश्वर का राज्य और सुसमाचार (जारी।)।

कक्षा #५:

III. परमेश्वर का राज्य:
   ज. परमेश्वर का राज्य और सुसमाचार (जारी।)।
   परीक्षा।

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -

सुसमाचार और राज्य : परीक्षा

संभावित २० अंकीय प्रश्न

१) इस तथ्य के बारे में लिखिए कि यीशु की मृत्यु पूर्णता में इस विचार को विकसित करके हुई कि वह एक बलिदान के रूप में और एक विकल्प के रूप में मरा। (पृष्ठ १६१,१६२)।

२) साक्ष्यों या तथ्यों के विभिन्न बिंदुओं के साथ पुनरुत्थान की वास्तविकता को बताएँ (पृष्ठ १६३,१६४)

३) स्वर्गारोहण के उद्देश्यों और अर्थों को समझाने के लिए पाँच बिंदुओं (पवित्रशास्त्र के साथ) का उपयोग करें (पृष्ठ १६७)।

४) परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य की तुलना करने के लिए सात बिंदुओं का उपयोग करें (किसी पवित्रशास्त्र के संदर्भ की आवश्यकता नहीं है) (पृष्ठ १७२,१७३)।

५) परमेश्वर का राज्य क्या है (पृष्ठ १७३-१७५)?

६) यह बताएँ कि कैसे परमेश्वर का राज्य झूठी समृद्धि की शिक्षा के विरुद्ध शिक्षा देता है (पृष्ठ १८५)।

संभावित १० अंकीय प्रश्न

१) स्पष्ट कीजिए कि यीशु किस प्रकार "प्रभु का दूत" प्रतीत होता है। पवित्रशास्त्र के एक वचन का प्रयोग करें (पृष्ठ १५९)।

२) बताएँ कि कैसे देहधारण सेवकाई से सम्बंधित है (पृष्ठ १६०)।

३) पुनरुत्थान के दो उद्देश्य बताइए (पृष्ठ १६५)।

४) मसीह के दूसरे आगमन के दो उद्देश्य बताइए (पृष्ठ १६९)।

५) परमेश्वर का राज्य कब प्रगट हुआ? पवित्रशास्त्र के वचन का प्रयोग करें (पृष्ठ १७५)।

६) राज्य की कुंजियाँ क्या हैं (पृष्ठ १७८)?

७) इस विचार की व्याख्या करें कि "बलवान" लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे (पृष्ठ १७९)।

८) परमेश्वर के राज्य की निकटता के प्रति क्या प्रतिक्रिया है। पवित्रशास्त्र का एक संदर्भ लें (पृष्ठ १८०)।

९) परमेश्वर के राज्य में सबसे बड़ा कौन है यह दिखाने के लिए एक वचन का प्रयोग करें (पृष्ठ १८१, १८२)।

१०) पवित्रशास्त्र के एक वचन का उपयोग यह दिखाने के लिए करें कि कैसे परमेश्वर का राज्य बलिदान के साथ जुड़ा हुआ है (पृष्ठ १८२)।

११) पवित्रशास्त्र के एक वचन का प्रयोग यह दिखाने के लिए करें कि कैसे परमेश्वर के राज्य की शिक्षा चरम आर्मीनियाईवाद के विरुद्ध है (पृष्ठ १८६)।

१२) पवित्रशास्त्र का एक संदर्भ लें जो दिखाता है कि परमेश्वर के राज्य की शिक्षा सहस्राब्दियों के बाद के अंतविद्या के विरुद्ध है (पृष्ठ १८७,१८८)।

सुसमाचार और राज्य

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना।

टिप्पणियाँ -

परमेश्वर के राज्य की प्रस्तावना:

"सुसमाचार" शब्द मसीही विश्वास के एक बहुत व्यापक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। इसका शाब्दिक अर्थ है "खुशखबरी" या "अच्छा समाचार"। नए नियम में, सुसमाचार के क्रिया रूप का अर्थ है "यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार की खुशखबरी की घोषणा करना, प्रचार करना या बताना"।

फिर भी, सुसमाचार के इस पहलू के अलावा, दो और तत्व हैं। प्रेरित पौलुस हमें १थिस्सलुनीकियों १:५ में सुसमाचार के इस त्रि-आयामी दृष्टिकोण को समझने में सहायता करता है:

उद्देश्य सुसमाचार - "हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न वचन मात्र ही के साथ पहुँचा,"

व्यक्तिपरक सुसमाचार - "वरन् सामर्थ्य, पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ।"

कार्यरत सुसमाचार - "जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिए तुम में कैसे बन गये थे।"

उद्देश्य सुसमाचार।

उद्देश्य सुसमाचार, सुसमाचार का मौखिक रूप से बोलना या प्रचार करना है। यीशु मसीह इस प्रचारित खुशखबरी के संदेश और बातों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सुसमाचार की उद्घोषणा एक ईश्वरीय शब्द है जो परमेश्वर के उद्देश्य को प्रगट करता है और जो लोग इसे सुनते हैं उन्हें एक प्रतिक्रियात्मक कार्य के लिए बुलाते हैं। यीशु के बारे में सच्चाई के इन वस्तुनिष्ठ तथ्यों की प्रस्तुति को सुसमाचार का वस्तुनिष्ठ भाग माना जाता है।

यह पाठ्यक्रम उद्देश्य सुसमाचार तथ्यों के गहन अध्ययन को प्रस्तुत करता है: मसीह का देहधारण, उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, कक्षा, और उसकी भविष्य में वापसी।

टिप्पणियाँ -

व्यक्तिपरक सुसमाचार।

सुसमाचार का एक गतिशील भाग है जो बहुत ही व्यक्तिपरक है। प्रेरित पौलुस ने यह गवाही दी कि सुसमाचार "सामर्थ्य और पवित्र आत्मा और बड़े निश्चय के साथ" आया। सुसमाचार का यह शक्तिशाली व्यक्तिपरक तत्व बोले गए वचनों या धार्मिक सिद्धांतों से परे है। सन्देश के प्रचार के भीतर, परमेश्वर मनुष्य के पास प्रगटीकरण के साथ प्रवेश करते हैं जो इसे प्राप्त करने वालों के हृदयों को बदल देता है (देखें रोमियों १:१५-१७)। सुसमाचार के प्रचार में, परमेश्वर की सामर्थ्य (जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया) (देखें रोमियों १:४, १ कुरिन्थियों १५:४) उद्धार लाने के लिए उपलब्ध हो जाती है। यह सामर्थ्य अंदरूनी रूप से मनुष्य के हृदय के परिवर्तन द्वारा, या बाह्य रूप से अलौकिक संकेतों और आश्चर्यकर्मों द्वारा दर्शायी जा सकती है।

यह रहस्यमय सामर्थ्य मसीही विश्वास को सैद्धांतिक मान्यताओं से परे एक अनुभवात्मक घटना की ओर ले जाने का कारण बनती है। यह घटना यीशु मसीह के साथ एक मुलाक़ात पर केंद्रित है, जिसके बाद विश्वासी के जीवन में यीशु के साथ उसका सम्बन्ध बना रहता है।

कार्यरत सुसमाचार।

सुसमाचार का तीसरा भाग वह परिणाम है जब कोई व्यक्ति प्रचार किए गए सुसमाचार को प्राप्त करता है और व्यक्तिपरक सुसमाचार की सामर्थ्य से परिवर्तित हो जाता है। यीशु मसीह के साथ एक मुलाकात एक परिवर्तित अनुभव को उत्पन्न करती है, जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसी जीवन शैली बनती है जो स्थायी रूप से सुसमाचार को दर्शाती है।

पौलुस यीशु के प्रकाशन से इतना प्रभावित हुआ (प्रेरितों के काम ९:२२,२६; १कुरिन्थियों ९:५) कि उसके कार्य और उसका व्यवहार स्वयं सुसमाचार का एक कथन बन गया। पौलुस ने बाद में प्रचारक की जीवन शैली की तुलना सुसमाचार की वास्तविक गतिशील व्यक्तिपरक सामर्थ्य से की। सुसमाचार न केवल उनके शब्दों में, बल्कि उनके जीवन में भी प्रदर्शित हुआ।

पौलुस का जीवन उस सुसमाचार के साथ इतना मिला हुआ था (यीशु से मिलने के परिणामस्वरूप) कि उसने एक जीवन शैली का उदाहरण प्रदर्शित किया जो स्वयं यीशु मसीह के उदाहरण के समानांतर था (देखें १ थिस्सलुनीकियों १:६)। इस प्रकार सुसमाचार प्रचारक की जीवन शैली सम्पूर्ण सुसमाचार अभिव्यक्ति का एक समान भाग बन जाती है।

इसलिए, सम्पूर्ण सुसमाचार को त्रि-आयामी दृष्टिकोण से समझा जा सकता है: उद्देश्य सुसमाचार, व्यक्तिपरक सुसमाचार, और प्रचारक की जीवन शैली में कार्यरत सुसमाचार।

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -

क. इस पाठ्यक्रम में हम सुसमाचार के उद्देश्य के बिन्दुओं का अध्ययन करेंगे।

१. यीशु का जन्म (देहधारण)।

२. यीशु की मृत्यु।

३. यीशु का उत्थान (इसमें पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, कक्षा और मसीह की वापसी शामिल है)।

४. मूल सुसमाचार कहता है:

क. परमेश्वर का जन्म इस संसार में हुआ और वह एक मनुष्य के रूप में यहाँ रहे।

ख. मनुष्य के छुटकारे के लिए वह क्रूस पर मरे।

ग. वह मरे हुओं में से जी उठे और स्वर्ग में चढ़ गये। अब वह पिता की दाहिनी ओर विराजमान हैं और जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए फिर आयेंगे।

ख. हम परमेश्वर के राज्य के विषय का भी अध्ययन करेंगे (यहाँ से इसे KOG कहा जायेगा)।

II. सुसमाचार।

क. सुसमाचार का आरम्भ।

१. यीशु का जन्म (देहधारण)।

क. देहधारण के विषय में नए नियम के वचन:

१) मत्ती १;२; ४:१-१७; ८:२३-२७; १३:५३-५७; १४:२८-३३; १६:१३-२०; १७:१३; २१:१-११; २२:४१-४५।

२) मरकुस १:१-३; १:२१-२४; १०:१३-१६।

३) लूका १;२; ३:२३-२७; ४:१६-३०; ७:१८-३४; १९:२८-४८।

४) यूहन्ना १:१-३४; ३:२५-३६; ४:३९-४२; ५:१७-२४; ५:३९-४७; ६:४८-६९; ७:१२-५२; ८:१-२०; १०; ११:१-२६।

५) प्रेरितों के काम १०:३४-३९।

टिप्पणियाँ -

६) रोमियों १:१-४।

७) फिलिप्पियों २:१-११।

८) कुलुस्सियों १:१५-१९।

९) इब्रानियों १;२; ५:७-९।

१०) १ यूहन्ना १:१-४; ४:१-३।

११) प्रकाशितवाक्य १।

ख. जब हम यीशु के जन्म की बात करते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि यीशु ही परमेश्वर हैं।

१) इस प्रकार, हम "देहधारण" शब्द का प्रयोग करते हैं क्योंकि यीशु के जन्म के द्वारा, परमेश्वर मनुष्य बन जाते हैं।

२) जब हम देहधारण के विषय में बात करते हैं तो हमें यह याद रखना चाहिए कि यीशु को मनुष्य बनने के लिए स्वर्ग में अपने विशेषाधिकारों को त्यागने की आवश्यकता थी (फिलिप्पियों २:६,७)। उस प्रक्रिया को "केनोसिस" कहा जाता है।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें। चित्र में दिखाए अनुसार सुसमाचार के घटनाओं के क्रम का अनुसरण करें। प्रत्येक पद का परिचय दें और संक्षेप में उनकी चर्चा करें।

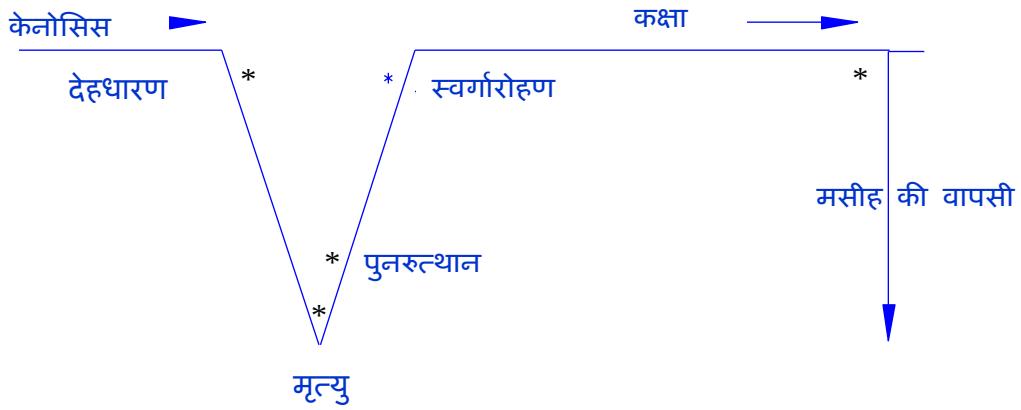

टिप्पणियाँ -

ग. हम देहधारण को मसीह के जन्म से बहुत पहले निम्नलिखित के द्वारा देख सकते हैं:

१) प्रभु का स्वर्गदूत। ये वास्तविक देहधारण से पहले यीशु के प्रकटन प्रतीत होते हैं (देखें उत्पत्ति १६:७,१०,१३; निर्गमन ३:२,६; न्यायियों ६:११,१४; यहोशू ५:१३-१५; निर्गमन २३:२०-२२)।

२) भविष्यवाणी (देखें यशायाह ७:१४)।

घ. देहधारण का विवरण।

१) वह देहधारी हुआ (यूहन्ना १:१४)।

२) वह स्त्री से जन्मा (गलातियों ४:४)।

३) वह शरीर में होकर आया (१यूहन्ना ४:२)।

४) वह शरीर में प्रगट हुआ (१ तीमुथियुस ३:१६)।

५) उसे हमारी समानता में बनाया गया (रोमियों ८:३; इब्रानियों २:१४)।

६) उसकी एक देह थी (इब्रानियों १०:५,१०; १यूहन्ना १:१-३)।

७) वह शरीर में मारा गया (१ पतरस ३:१८; ४:१)।

ङ. देहधारण के उद्देश्य।

१) पिता को प्रगट करना (यूहन्ना १४:८-११)।

२) परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना (इब्रानियों १०:५-९)।

३) भविष्यवाणी को पूरा करना (लूका ४:१७-२१)।

४) हमारे पापों के कारण मारा जाना (१ पतरस ३:१८)।

५) सब धार्मिकता को पूरा करना (मत्ती ३:१५)।

६) संसार का मिलाप करवाना (२ कुरिन्थियों ५:१८-२१)।

७) हमारा महायाजक बनना (इब्रानियों ७:२४-२८)।

८) हमारे लिए एक आदर्श बनना (१ पतरस २:२१-२३)।

टिप्पणियाँ -

च. देहधारण का महत्व।

१) मसीह के ईश्वरत्व का प्रमाण या साक्ष्य (रोमियों ९:३-५)।

२) पुनरुत्थान की पुष्टि करने के लिए (प्रेरितों के काम २:२४-३२)।

३) विश्वासियों के लिए एक परीक्षा के रूप में (१ यूहन्ना ४:१-६)।

२. देहधारण का सारांश।

क. देहधारण सुसमाचार का एक आवश्यक हिस्सा है। केवल परमेश्वर ही हमें क्षमा कर सकते हैं। केवल परमेश्वर ही हमारे लिए मर सकते हैं।

ख. देहधारण के सिद्धान्त में हम देख सकते हैं कि यीशु दो चीजें हैं:

१) परमेश्वर का पुत्र। वह पूर्णतः परमेश्वर है।

२) मनुष्य का पुत्र। वह पूर्ण रूप से मनुष्य है।

ग. वे नाम जो देहधारण की ओर इशारा करते हैं।

१) पुराना नियम- यशायाह ७:१४ इम्मानुएल नाम का अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ"।

२) नया नियम-मत्ती १:२१ यीशु के नाम का अर्थ है "परमेश्वर बचाता है"।

घ. देहधारण और संसार में प्रचार।

१) परमेश्वर स्वयं हमारे साथ अपनी पहचान को स्थापित करने के लिए तैयार थे। वह हम में से एक बनने और हमारे साथ रहने को तैयार थे।

२) एक सुसमाचारक को इस आदर्श का पालन करना चाहिए। उसे लोगों और उनके रीति-रिवाजों के साथ अपनी पहचान बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे लोगों के साथ रहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

चर्चा विषय

देहधारण हमारे लिए एक मजबूत आदर्श को प्रस्तुत करता है ताकि हम अपने समुदाय और स्थानीय क्षेत्र में सुसमाचार के साथ पहुँच सकें। कौन-सी बात हमें बाइबल के इस नमूने का अनुसरण करने से रोकती है? चर्चा करें और साक्ष्य साझा करें।

टिप्पणियाँ -

ख. सुसमाचार का केंद्र (हृदय)।

१. यीशु की मृत्यु (क्रूस)। क्रूस से सम्बंधित नए नियम के निम्नलिखित धर्मग्रंथों का अध्ययन करें:

क. मत्ती २०:२८;२६;२७।

ख. मरकुस १४;१५।

ग. लूका ९:३०,३१;२२;२३।

घ. यूहन्ना १:२९; ३:१६,१७;१०:११-१५;१८;१९।

ङ. रोमियों ३:२१-२६; ५:८,९; ६:१०; ८:३१-३४।

च. १ कुरिन्थियों ५:७।

छ. गलातियों ३:१३,१४।

ज. फिलिप्पियों २:८।

झ. कुलुस्सियों २:१३-१५।

ञ. इब्रानियों २:१४-१७; ७:२३-२८; १०:१-२२।

२. यीशु की मृत्यु (क्रूस) वह तरीका है जिसे परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए प्रदान किया है।

क. यीशु पूर्णता में मरे (वह पापी नहीं थे)। इस प्रकार, वह बलिदान के रूप में मरे (१ यूहन्ना १:९)।

१) बलिदान अंतिम है (रोमियों ६:१०)।

२) वह बलिदान है (इब्रानियों ७:२७)।

३) वह याजक और बलिदान है। यह उसका अपना लहू है (इब्रानियों ९:१२)।

४) यह दोषरहित बलिदान है (१ पतरस १:१९)।

टिप्पणियाँ -

ख. यीशु पूर्णता में मरे (वह पापी नहीं थे)। इस प्रकार, वह एक विकल्प के रूप में मर गये। हमारे बदले उनकी मृत्यु हो गई (प्रेरितों के काम २०:२८; कुलुस्सियों २:१३-१५; १ पतरस २:२२-२४; १ यूहन्ना २:१,२)

१) उन्होंने हमारी सज़ा को ले लिया (यशायाह ५३)।

२) वह हमारा छुटकारा है (मरकुस १०:४५)।

३) एक दाम था (१ कुरिन्थियों ६:२०)।

४) वह हमारे बदले मारे गये (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

चर्चा विषय

यदि यीशु के बारे में ये सब बातें सत्य हैं, तो हम और अधिक उत्सुकता से उसका अनुसरण क्यों नहीं करते? ऐसी कौन-सी चीज़ है जो हमें ऐसा करने से रोकती है?

ग. सुसमाचार का अंत।

१. यीशु का उत्थान (पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, कक्षा, और मसीह की वापसी)। यीशु के उत्थान से सम्बन्धित नए नियम के निम्नलिखित धर्मग्रंथों का अध्ययन करें:

क. भजन संहिता २:७-१२; १६:११; ४५:१-१७; ११०:१।
ख. यशायाह ९:७।
ग. यिर्मयाह २३:५,६।
घ. मत्ती २६:६४; २८:१-२०।
ङ. मरकुस १६।
च. लूका १:३२,३३; २४।
छ. यूहन्ना २:१९-२२; ३:१२-१५; ६:६०-६३; १०:१७,१८; ११:२५,२६; १७:१-५; १८:३६,३७; २०;२१।
ज. प्रेरितों के काम १:११,२२; २:२२-३२; ३:१५; ४:२; ४:३३; ५:३०,३१; ७:५६; १३:३०-३७;१७:१६-३२।
झ. रोमियों १:१-४; ८:३४।
ञ. १ कुरिन्थियों १५:१-२८।
ट. इफिसियों १:१९-२२; ४:७-१०।
ठ. फिलिप्पियों २:९-१।
ड. कुलुस्सियों २:१५।
ढ. १ तीमुथियुस ३:१६।
ण. इब्रानियों १:३-१४; २:९; ४:१४; ७:२३-२६; ८:१; ९:२४; १०:१२,१३; १२:२।
त. १ पतरस ३:२१,२२।
थ. प्रकाशितवाक्य ५:६।

टिप्पणियाँ -

२. पुनरुत्थान।

क. पुनरुत्थान का महत्व (देखें १ कुरिन्थियों १५:१२-१९)।

ख. पुनरुत्थान की प्रस्तुति।

१) भजन संहिता में (भजन संहिता १६:१०,११; प्रेरितों. १३:३४,३५)।

२) भविष्यवक्ताओं में (यशायाह ५३:१०-१२; १ कुरिन्थियों १५:४)।

३) यीशु के वचनों में (मरकुस ९:९,१०; यूहन्ना २:१९-२२) ।

४) प्रेरितों के प्रचारों में (प्रेरितों के काम २:३२; ३:१५)।

ग. पुनरुत्थान का कारण।

१) परमेश्वर की सामर्थ्य (प्रेरितों के काम २:२४)।

२) मसीह की सामर्थ्य (यूहन्ना १०:१८)।

३) पवित्र आत्मा की सामर्थ्य (रोमियों ८:११) ।

घ. पुनरुत्थान का प्रमाण/साक्ष्य।

१) खाली कब्र (यूहन्ना २०:१-९)।

२) स्वर्गदूतों की गवाही (मत्ती २८:५-७)।

३) उसके शत्रुओं की गवाही (उनके कार्यों के माध्यम से) (मत्ती २८:११-१५)।

४) कई ठोस सबूत (प्रेरितों के काम १:३; यूहन्ना २०:२०,२७)।

५) रविवार के दिन को प्रभु के दिन के रूप में स्थापित करना (यूहन्ना २०:१, १९; १कुरिन्थियों १६:२)।

६) प्रेरितों की गवाही और उपदेश (प्रेरितों के काम २:२२-३२; ४:३३)।

टिप्पणियाँ -

सात प्रश्न जो पुनरुत्थान का प्रमाण देते हैं:

१) आप चेलों में महान परिवर्तन की व्याख्या कैसे कर सकते हैं?

वे डरे हुए थे। वे संदेह कर रहे थे। वे छुपे हुए थे। वे हतोत्साहित थे। अचानक वे निडर हो गए। वे आश्वस्त थे। वे प्रचार करने के लिए सड़कों पर निकले। उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

पहले	**बाद में**
डर	निडर
संदेह	आश्वस्त
छिपे हुए	सार्वजनिक रूप से प्रचार करना
हतोत्साहित	प्रोत्साहित

२) आप चेलों की गवाही की निरंतरता की व्याख्या कैसे कर सकते हैं?

उन सबकी गवाही एक ही थी। अगर यह एक षडयंत्र होता तो सैकड़ों लोगों के लिए विस्तार रूप से एक ही कहानी होना असंभव होता।

३) आप इसकी व्याख्या कैसे कर सकते हैं कि चेले पुनरुत्थान की गवाही के लिए मरने को तैयार थे?

केवल एक वास्तविक अनुभव ही उस प्रकार का साहस पैदा कर सकता है।

४) आप सभी ऐतिहासिक गवाहों को कैसे समझा सकते हैं (१ कुरिन्थियों १५:६)?

५) आप इसकी व्याख्या कैसे कर सकते हैं कि सुसमाचार के शत्रु कभी भी सफलतापूर्वक साबित नहीं कर सके कि पुनरुत्थान झूठा था?

उन्हें देह नहीं मिली।

६) आप गवाहों की विश्वसनीयता की व्याख्या कैसे कर सकते हैं?

लोगों ने गवाही सुनी और उसका मूल्यांकन किया। उन्होंने गवाहों की विश्वसनीयता और उनकी गवाही को स्वीकार किया।

७) आप मसीही विश्वास के पहले ३०० वर्षों के अविश्वसनीय विकास की व्याख्या कैसे कर सकते हैं?

इन सात प्रश्नों का एकमात्र संभावित उत्तर यह है कि यीशु मसीह वास्तव में मरे हुओं में से जी उठे।

टिप्पणियाँ -

ङ. पुनरुत्थान का रूप।

१) देह में (यूहन्ना २०:२७; लूका २४:३९-४३)।

२) एक आत्मिक देह (लूका २४:३१,३६; यूहन्ना २०:१९; १ कुरिन्थियों १५:४४)।

३) यह रहस्यमय है (लूका २४:१६; मरकुस १६:१२; यूहन्ना २०:१४)।

च. पुनरुत्थान के उद्देश्य।

१) पवित्रशास्त्र के वचनों को पूरा करने के लिए (लूका २४:४५,४६)।

२) पापों की क्षमा के लिए (१ कुरिन्थियों १५:१७)।

३) पापियों को धर्मी ठहराने के लिए (रोमियों ४:२५; ८:३४)।

४) आशा देने के लिए (१ कुरिन्थियों १५:१८,१९)।

५) विश्वास को वास्तविक बनाने के लिए (१ कुरिन्थियों १५:१४-१७)।

६) यह साबित करने के लिए कि यीशु पुत्र हैं (भजन संहिता २:७; रोमियों १:४)।

७) यीशु की ईश्वरीयता को सिद्ध करने के लिए (यूहन्ना २०:२६-२९)।

८) यीशु के प्रभुत्व को सिद्ध करने के लिए (प्रेरितों के काम २:२४,२९,३४)।

९) मृत्यु की सामर्थ्य को तोड़ने के लिए (प्रेरितों. २:२४; १कुरिन्थियों १५:२०,२२,५४)।

१०) यीशु को दाऊद के सिंहासन पर बिठाने के लिए (प्रेरितों के काम २:३०-३२)।

११) यीशु के उत्थान का आश्वासन देने के लिए (प्रेरितों. ४:१०,११; फिलिप्पियों २:९,१०)।

१२) आने वाले न्याय के आश्वासन के लिए (प्रेरितों के काम १७:३१)।

१३) विश्वासी के जी उठने पर मुहर लगाने के लिए (प्रेरितों. २६:२३; १ कुरिन्थियों १५:२०,२३)।

टिप्पणियाँ -

छ. पुनरुत्थान के बाद यीशु का प्रगट होना। निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें:

घटनाएँ	समय	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	प्रेरितों के काम	१ कुरि.
यरूशलेम के बाहर खाली कब्र	रविवार की सुबह	२८:१-१०	१६:१-८	२४:१-१२	२०:१-९		
खाली कब्र: मरियम मगदलीनी	रविवार की सुबह		१६:९-११		२०:११-१८		
२ यात्री: इम्माऊस का मार्ग	रविवार की दोपहर			२४:१३-३२			
पतरस: यरूशलेम में	रविवार			२४:३४			१५:५
ऊपरी कक्ष में १० चेले	रविवार की रात			२४:३६-४३	२०:१९-२५		
ऊपरी कक्ष में ११ चेले	एक सप्ताह के बाद		१६:१४		२०:२६-३१		
गलील की झील के किनारे ७ चेले	एक सप्ताह के बाद				२१:१-२३		
गलील के एक पहाड़ में ११ चेले	कुछ समय बाद	२८:१६-२०					
५०० से अधिक	कुछ समय बाद						१५:६
याकूब	कुछ समय बाद						१५:७
स्वर्गारोहण: जैतून का पर्वत	पुनरुत्थान के ४० दिन बाद		१६:१९	२४:५०-५३		१:३-८	
पौलुस	कुछ समय बाद					९:१-६	१५:८

टिप्पणियाँ -

३. स्वर्गारोहण।

क. स्वर्गारोहण की प्रस्तुति।

१) भविष्यवाणी (भजन संहिता ६८:१८; इफिसियों ४:८-१०; भजन संहिता २४)।

२) मसीह के वचन (लूका ९:५१; यूहन्ना २०:१७; यूहन्ना ६:६२)।

ख. वास्तविक घटना।

१) पुनरुत्थान के ४० दिन बाद (लूका २४:४८-५१; प्रेरितों के काम १:१-१२)।

२) घटना के संदर्भ (प्रेरितों के काम १:२२; इफिसियों ४:८-१०)।

ग. स्वर्गारोहण के उद्देश्य और अर्थ।

१) ताकि पवित्र आत्मा आये (यूहन्ना १६:७)।

२) महिमा और आदर प्राप्त करने के लिए (इब्रानियों २:९)।

३) दाऊद के सिंहासन पर राज्य करने के लिए (प्रेरितों के काम २:२९-३६)।

४) पिता के पास बैठना (इफिसियों १:२०; इब्रानियों १:३)।

५) विश्वासियों के लिए मेल करने में सक्षम होने के लिए (रोमियों ८:३४; इब्रानियों ७:२५)।

६) अपने लोगों के लिए जगह तैयार करने के लिए (यूहन्ना १४:२)।

७) एक याजक के रूप में सेवा करने के लिए (इब्रानियों ४:१४-१६; ८:१,२)।

८) विजय में राज्य करने के लिए (१कुरिन्थियों १५:२४-२८)।

९) अपनी विजय की महानता को दिखाने के लिए (इफिसियों ४:८)।

१०) मनुष्यों को दान देने के लिए (इफिसियों ४:८)।

११) उनकी सर्वोच्चता दिखाने के लिए (प्रेरितों के काम ४:३१; फिलिप्पियों २:९)।

१२) विश्वासियों को उनके साथ बढ़ाना (कुलुस्सियों ३:१-३; इफिसियों २:६)।

१३) उनकी वापसी की ओर इशारा करने के लिए (प्रेरितों के काम १:११)।

टिप्पणियाँ -

४. कक्षा (स्वर्ग में मसीह)।

क. वर्तमान में, यीशु स्वर्ग में हैं (१ पतरस ३:२२; इफिसियों १:२०; प्रेरितों के काम ७:५६; प्रकाशितवाक्य ५:६-१०)।

ख. कक्षा का रूप "परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है।"

१) विराजमान — सिंहासन पर बैठने के लिए (प्रकाशितवाक्य ३:२१)।

२) दाहिना हाथ—परमेश्वर के साथ रहना (यूहन्ना १:१)।

३) परमेश्वर का — अलग न होना (प्रकाशितवाक्य २२:३, यहाँ केवल एक ही सिंहासन है)।

क) यह त्रिएकता के विरोधाभास की तरह है: विशिष्ट लेकिन अलग नहीं।

ख) इस प्रकार, यूहन्ना १:१ में बाइबल कहती है कि वह परमेश्वर के साथ था और वह परमेश्वर था।

ग. कक्षा का अर्थ।

१) आदर और महिमा (इब्रानियों २:९)।

२) आनन्द (भजन संहिता १६:११)।

३) मसीह का राज्य (इफिसियों १:२०-२३; १ कुरिन्थियों १५:२३-२५)।

टिप्पणियाँ -

५. मसीह की वापसी।

क. यदि मसीह का उत्थान सुसमाचार का अन्त है, तो मसीह की वापसी अन्त का अन्त है।

ख. मसीह की वापसी को किस दिन के रूप में वर्णित किया गया है:

१) प्रभु (१ थिस्सलुनीकियों ५:२)।
२) प्रभु यीशु (१ कुरिन्थियों ५:५)।
३) परमेश्वर (२ पतरस ३:१२)।
४) वह दिन (२ थिस्सलुनीकियों १:१०)।
५) अन्तिम दिन (यूहन्ना १२:४८)।

ग. मसीह की वापसी के उद्देश्य।

१) उसके वचन को पूरा करने के लिए (यूहन्ना १४:३)।

२) मुर्दों को जी उठाने के लिए (१ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८)।

३) मृत्यु को नष्ट करने के लिए (१ कुरिन्थियों १५:२५,२६)।

४) चुने हुओं को इकट्ठा करने के लिए (मत्ती २४;३१)।

५) संसार का न्याय करने के लिए (मत्ती २५:३२-४६)।

६) विश्वासियों की महिमा करने के लिए (कुलुस्सियों ३:४)।

७) परमेश्वर के लोगों को प्रतिफल देने के लिए (मत्ती १६:२७)

टिप्पणियाँ -

घ. मसीह की वापसी का समय।

१) यह अज्ञात है (मत्ती २४:२७,३६)।

२) सभी राष्ट्रों को सुसमाचार सुनाए जाने के बाद (मत्ती २४:१४)।

३) मसीह विरोधी के उदय के बाद (२ थिस्सलुनीकियों २:२,३)।

४) आखिरी तुरही पर (१ कुरिन्थियों १५:५१,५२)।

५) नूह के जैसे दिनों में (मत्ती २४:३७-४७)।

ङ. मसीह की वापसी का तरीका।

१) बादलों पर (मत्ती २४:३०)।

२) धधकती आग में (२ थिस्सलुनीकियों १:७,८)।

३) स्वर्गदूतों के साथ (मत्ती २५:३१)।

४) चोरों के समान (१ थिस्सलुनीकियों ५:२,३)।

५) उसकी महिमा में (मत्ती २५:३१)।

च. विश्वासी के पास मसीह की वापसी के प्रति सही दृष्टिकोण होना चाहिए।

१) उसे इसके लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए (१ कुरिन्थियों १:७)।

२) उसे इसकी तलाश करनी चाहिए (तीतुस २:१३)।

३) उसे इसके लिए तैयार रहना चाहिए (मत्ती २४:४२-५१)।

४) उसे इससे प्रेम करना चाहिए (२ तीमुथियुस ४:८)।

५) उसे उसके आने तक व्यस्त रहना चाहिए (लूका १९:१३-१८)।

६) उसे इसके आने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (प्रकाशितवाक्य २२:२०; लूका १८:७,८)।

चर्चा विषय

आगे के प्रश्न पूछने या सुसमाचार से संबंधित टिप्पणियाँ देने के लिए समय दें।

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -

III. परमेश्वर का राज्य (KOG)।

क. परमेश्वर के राज्य की प्रस्तावना (KOG)।[१]

राज्य का पहलू	विवरण
KOG परिभाषा *(मत्ती १९:१२; भजन संहिता १०३:१)*	परमेश्वर का शासन, परमेश्वर का राज्य, राजत्व, या परमेश्वर का अधिकार उन लोगों के हृदयों में है जो स्वयं को उसके सुपूर्त कर देते हैं। अगले युग में, यह सारे संसार पर परमेश्वर का वही राज्य या शासन होगा।
बाइबल का रहस्य *(रोमियों १६:२५,२६)*	बाइबल का रहस्य कुछ ऐसा है जिसे अनंत काल तक गुप्त रखा गया, लेकिन अब इसका खुलासा किया गया है।
KOG का रहस्य *(मरकुस ४:११ मत्ती १३)*	— वह राज्य जो एक दिन बाहरी आज्ञा को बदल देगा, इस युग में पुरानी आज्ञा को बदले बिना लोगों के लिए KOG की आशीष को लाने के लिए अग्रिम रूप से प्रवेश कर चुका है। - KOG यहाँ हमारे बीच काम कर रहा है, लेकिन परमेश्वर लोगों को इसके सामने झुकने के लिए विवश नहीं करते हैं। वे इसे अस्वीकार कर सकते हैं। उन्हें इसे एक इच्छुक हृदय और एक विनम्र इच्छा के साथ प्राप्त करना चाहिए।
राज्य का जीवन *(यूहन्ना १७:३, यूहन्ना ३:३,रोमियों १४ :७)*	अनन्त जीवन KOG से सम्बन्धित हैं, आने वाले युग का है, लेकिन इसने इस वर्तमान बुरे युग में भी प्रवेश कर लिया है। मनुष्य फिर से जन्म लेकर इस जीवन का अनुभव कर सकता है। अनन्त जीवन इस जीवनकाल के दौरान व्यक्तिगत संबंधों और अनुभव के माध्यम से परमेश्वर को जानना है।
राज्य की धार्मिकता *(मत्ती ५:७, इफिसियों २:८,९; मरकुस १०:१५; लूका २२:२९)*	KOG की धार्मिकता हमें तब प्रदान की जाती है जब हम परमेश्वर को अपने हृदय में राज्य करने की अनुमति देते हैं। KOG की धार्मिकता के लिए आवश्यक मानक को कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता है। हमें इसे एक बच्चे की तरह परमेश्वर की असीम कृपा के माध्यम से प्राप्त करना चाहिए।
KOG की माँग *(मरकुस १:१५; लूका ९:२३; मत्ती ६:३३; मत्ती १९:१६)*	KOG एक मौलिक माँग करता है - परमेश्वर को आपके स्वयं के जीवन पर शासन करने की अनुमति देने के निर्णय की मांग। इसके लिए "पश्चाताप" की आवश्यकता है, जो कि आपके जीवन को उलटने के लिए, KOG की दिशा को अपनाने के लिए है।
KOG वर्तमान वास्तविकता है *(मरकुस १:१५; मत्ती १२:२८; लूका १७:२०, रोमियों १२:१,२)*	एक युग के बाद दूसरा युग आता है। आने वाले युग की शक्तियाँ इस युग में प्रवेश कर चुकी हैं, जबकि हम अभी भी इस वर्तमान बुरे युग में जी रहे हैं। हम रूपांतरित हो गए हैं और अब इस युग की शक्तियों के अनुरूप नहीं हैं।
KOG भविष्य है *(लूका २२:१८; मरकुस ९:१)*	KOG पूरी तरह से तब तक नहीं आएगा जब तक कि मसीह का दूसरा आगमन और मृतकों का पुनरुत्थान नहीं हो जाता। वे आने वाले युग की ओर ले जाएँगे, जब सारी बुराई नष्ट हो जाएगी।
KOG पूर्णता में कब आएगा? *(मत्ती २४:१४; २८:१९,२०)*	"राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -

ख. प्रभु के राज्य को कहना आवश्यक है (अन्य राज्य भी हैं)।

१. शैतान का राज्य (लूका ११:१८)।

२. शैतान को इस संसार का ईश्वर कहा जाता है (२ कुरिन्थियों ४:४)।

३. KOG इस संसार का नहीं है (यूहन्ना १८:३६)।

ग. KOG और शैतान के राज्य के बीच एक तुलना।

परमेश्वर का राज्य	शैतान का राज्य
प्रकाश: यशायाह ५८:८; प्रकाशितवाक्य २१:२३; १ तीमुथियुस ६:१६	अन्धकार: इफिसियों ६:१२; १ यूहन्ना २:९; प्रकाशितवाक्य १६:१०; कुलुस्सियों १:१३
प्रेम: मत्ती २२:३७; इफिसियों ६:२४; रोमियों ५:८; याकूब १:२७	परमेश्वर से अलगाव: मत्ती १३:१९ १ यूहन्ना ३:८; प्रकाशितवाक्य २:१०,१३,१४
छुटकारा: मत्ती ८:११; प्रकाशितवाक्य ५:९; यशायाह ५१:११	परमेश्वर से अलगाव: (ऊपर देखें)
सत्य: यूहन्ना १४:६; यूहन्ना ८:३२; व्यवस्थाविवरण ३२:४	झूठ: २ थिस्सलुनीकियों २:९; यूहन्ना ८:४४; १ राजा २२:२२
परमेश्वर की सामर्थ्य: लूका २१:२७; यूहन्ना १:१२; रोमियों १:२०; १ कुरिन्थियों १:२४	कोई सामर्थ्य नहीं है: मत्ती १६:१८; रोमियों १६:२०; लूका २२:३१
यह स्थायी रहेगा: रोमियों ६:२३;२ कुरिन्थियों ५:१; २ पतरस १:११	अस्थायी: यहूदा ६; प्रकाशितवाक्य २०:१०; १यूहन्ना ३:८
इस संसार का नहीं है: यूहन्ना १८:३६; मत्ती १६:१९; रोमियों १४:१७	अस्थायी: (ऊपर देखें)
एकता और सद्भाव: यूहन्ना १०:१६; रोमियों१२:५; १ कुरिन्थियों १०:१७	गड़बड़ी: १ कुरिन्थियों १४:३३; यशायाह ४१:२९; याकूब ३:१६
शान्ति: लूका २:१४; मत्ती ५:९; फिलिप्पियों ४:७	गड़बड़ी: (ऊपर देखें)
दया: २ कुरिन्थियों १:३; इफिसियों २:४; १ पतरस १:३	मृत्यु: रोमियों ६:२३; रोमियों ५:१२; प्रकाशितवाक्य १:१८
बलिदान: रोमियों १२:१; इब्रानियों १०:१२; इब्रानियों १३:१५	गर्व: नीतिवचन १६:१८; नीतिवचन १३:१०; याकूब ४:६
दीनता: १ पतरस ५:५; मत्ती ५:५; याकूब ४:६	गर्व: (ऊपर देखें)
यीशु परमेश्वर है: कुलुस्सियों १:१६; यशायाह ६:१-३; यूहन्ना १:३; यूहन्ना ५:१७	दुष्टात्मा: याकूब २:१९; १ तीमुथियुस ४:१; प्रकाशितवाक्य १६:१४; प्रकाशितवाक्य १८:२
पवित्र त्रिएकता: यशायाह ४८:१६; मत्ती १२:१८; यूहन्ना १४:१६	दुष्टात्मा: (ऊपर देखें)
स्वर्गदूत: मत्ती १३:१४; लूका २०:३६; १ कुरिन्थियों६:३	दुष्टात्मा: (ऊपर देखें)
पाप और मृत्यु पर विजय: रोमियों ६:२३; १ यूहन्ना ५:१२;यूहन्ना ३:१६; यूहन्ना ५:२४	पाप: रोमियों ५:१२; १ कुरिन्थियों १५:५६; २ थिस्सलुनीकियों २:३
विश्वास: इफिसियों २:८,९; रोमियों ३:२८; रोमियों १४:२३	पाप: (ऊपर देखें)

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -

परमेश्वर का राज्य	शैतान का राज्य
ईमानदार: १ कुरिन्थियों ९:२५; १ कुरिन्थियों १५:५०; १ पतरस १:४,२३	भ्रष्ट: रोमियों ८:१९-२१; २ पतरस १:४; गलातियों ६:८
स्वेच्छा: इब्रानियों ११:२५; यहोशू २४:१५; व्यवस्थाविवरण ३०:१९	दासत्व: २ पतरस २:१९; लूका ४:१८; यूहन्ना ८:३४,३५
आनन्द: नहेम्याह ८:१०; भजन संहिता १२६:५; १ पतरस १:१८; लूका १५:७	सज़ा: मत्ती १८:८; इब्रानियों २:२,३; प्रकाशितवाक्य २०:१५
विजय: इफिसियों ६:१३; रोमियों ८:३७; १ कुरिन्थियों १५:५४	पराजय: मत्ती १३:३०; १ यूहन्ना ३:८; उत्पत्ति ३:१५
धर्मी: भजन संहिता ११:७; यशायाह ५४:१४; रोमियों १०:४	दुष्ट: १ यूहन्ना ३:१२; ३ यूहन्ना ११

घ. यीशु और KOG।

१. वह राज्य को निकट लाये (मरकुस १:१५)

२. उन्होंने राज्य में प्रवेश करने की बात कही (मत्ती ५:२०; ७:२१; १८:३)

३. उन्होंने राज्य के आने के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा (मत्ती ६:१०)

४. उन्होंने राज्य का प्रचार करने को कहा (मत्ती ९:३५; १०:७)

५. उन्होंने सामर्थ्य के साथ राज्य को प्रदर्शित किया (मत्ती १२:१५,२२,२८)

६. उन्होंने दृष्टान्तों में राज्य की व्याख्या की (मत्ती १३)

७. उन्होंने राज्य में भविष्य की आशीषों का वादा किया (मत्ती २५:३१,३४)

८. उन्होंने पुनरुत्थान के बाद ४० दिनों तक राज्य के बारे में बात की (प्रेरितों के काम १:३,६)

ङ. KOG क्या है?

१. यह कलीसिया नहीं है। बाइबल यह नहीं कहती है कि KOG और कलीसिया समान हैं।

२. यह भौगोलिक स्थिति नहीं है।

३. यह उस स्थान के लोग नहीं हैं।

४. यह एक राजा का अधिकार और शासन है। इस मामले में, राजा यीशु है! (भजन संहिता १०३:१९ और लूका १९:१२,१५,२७ देखें।

टिप्पणियाँ -

५. KOG परमेश्वर की संप्रभु क्रिया है। मनुष्य KOG नहीं बना सकता। मनुष्य को KOG प्राप्त करना चाहिए। यदि वह इसे प्राप्त नहीं करता है, तो उसके लिए इसमें कोई स्थान नहीं है (मरकुस १०:१५)।

क. परमेश्वर राज्य देते हैं (लूका १२:३२)।

ख. यीशु राज्य को "ठहराते" हैं (लूका २२:२९)।

ग. परमेश्वर बताते हैं कि राज्य किसके पास आएगा (मत्ती ५:३; मरकुस १०:१४)।

घ. परमेश्वर निमंत्रण देते हैं (लूका १४:१५-२४)।

ङ. परमेश्वर कुछ लोगों को प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं (लूका १४:१५-२४)।

च. परमेश्वर कुछ लोगों को प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते (लूका १४:१५-२४)।

६. KOG सुसमाचार है।

क. यह पापियों के लिए सुसमाचार है (लूका ९:५१-५६)।

ख. यह सुसमाचार है - यह क्षमा, शान्ति और आनन्द प्रदान करता है (मत्ती १३ में KOG के विवरण की सकारात्मक प्रकृति पर विचार करें)।

ग. यह कोई इनाम नहीं है। यह एक दान है।

घ. राज्य की सामर्थ्य का प्रदर्शन आनन्द, स्वतंत्रता और उत्सव में परिणत होता है (यशायाह ३५:६; मरकुस २:१-१२; लूका १०:१७)।

ङ. **अनुप्रयोग**: कलीसिया का संदेश सुसमाचार के विचार के अनुरूप होना चाहिए।

७. KOG संसार के विपरीत है।

क. यह इस संसार का नहीं है (यूहन्ना १८:३६; लूका २३:४२; प्रेरितों के काम १:६)।

ख. यह हिंसक कार्य की विशेषता नहीं है। यह कोई राष्ट्रवादी या राजनीतिक अवधारणा नहीं है। चेलों ने इसे इस तरह से सोचा और भ्रमित हो गए (लूका १९:११)।

ग. लालच के बजाय उदारता पर ध्यान दिया गया है (मत्ती ५:४०-४२; लूका १२:३२,३३)।

टिप्पणियाँ -

घ. यह धन और संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है (मत्ती ६:१९-३४)।

ङ. यह अधिकारों और विशेषाधिकारों से अधिक महत्वपूर्ण है (मत्ती ५:३९-४१; मरकुस १०:४२-४४)।

च. यह परिवार और मित्रों से अधिक महत्वपूर्ण है (लूका १४:२६; मत्ती १०:३४-३९)।

छ. यह व्यक्तिगत मनोवृत्तियों और छिपी इच्छाओं से अधिक महत्वपूर्ण है (मत्ती ५:२१-४८)।

ज. इसके लिए पूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता है (लूका ९:६२)

च. KOG कब प्रगट होता है?

१. यह अब यहाँ है (मरकुस १:१५; मत्ती १२:२८; लूका १७:२०,२१)।

२. वह अभी यहाँ नहीं है (लूका २२:१८; मरकुस ९:१)।

छ. KOG और सुसमाचार।

१. यीशु की अधिकांश शिक्षाओं का संबंध KOG से था। इस प्रकार, हम चार सुसमाचारों के भीतर KOG के कई सिद्धान्तों को देख सकते हैं। निम्नलिखित चार सुसमाचारों में पाए जाने वाले राज्य के सिद्धान्तों का एक संपूर्ण, व्यवस्थित अध्ययन है।

२. KOG क्या है?

क. KOG रहस्यमय है। उन रहस्यों को देखने और सुनने (समझने) के लिए जो आपको दिए जाने चाहिए (मत्ती १३:११)।

ख. KOG शब्द को "सुसमाचार" शब्द के साथ बदल दिया गया है (लूका ९:२,६)।

ग. परमेश्वर KOG में वृद्धि का कारण बनते हैं। परमेश्वर के चेले आज्ञाकारी पात्र हैं। वे वचन का प्रचार करते हैं। वे किसानों की तरह हैं जिन्हें परिणामों के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। किसान विकास को नियंत्रित या समझ नहीं सकता है, लेकिन फिर भी वह बीज बोता है। KOG में भी ऐसा ही है (मरकुस ४:३-८;२६-२९)।

टिप्पणियाँ -

घ. KOG ऐसा स्थान नहीं है जो कि एक नियम या एक शासन हो (लूका १९:१२-१४)।

ङ. डाकू यीशु से कहता है कि जब उसका राज्य आये तब वह उसकी सुधि ले। यीशु उत्तर देते हैं: "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। "KOG स्वर्ग है (लूका २३:४२,४३)।

३. KOG कैसा है?

क. सबसे पहले, हम दोहराते हैं कि यह रहस्यमय है (मत्ती १३:११)।

ख. KOG इस संसार का नहीं है।

१) यह इस क्षेत्र या व्यवस्था का नहीं है। यह एक भौतिक राज्य नहीं बल्कि एक आत्मिक राज्य है (यूहन्ना १८:३६)।

२) उदाहरण के लिए, जिसने KOG के आगमन का प्रचार किया, उसने ऊंट के रोम के वस्त्र पहने और टिड्डियों को खाया (मत्ती ३:४ और मत्ती ११:८)।

३) यह इस संसार के विरोध में है।

क) KOG बलपूर्वक आगे बढ़ता है (क्योंकि यह इस संसार का नहीं है - इसका एक प्रतिद्वंद्वी है)। बलवान मनुष्यों को इसे बलपूर्वक लेना चाहिए (क्योंकि मनुष्यों के विरोधी होते हैं—शैतान, संसार और उनका अपना मांस)। KOG स्वाभाविक रूप से इस संसार में प्रवेश नहीं करता है। इस प्रकार, यह एक संघर्ष है (मत्ती ११:१२; १ कुरिन्थियों ९:२७ भी देखें)।

ख) धनवान लोगों के लिए KOG में प्रवेश करना कठिन है। KOG में प्रवेश करने के लिए आपको संसार को पीछे छोड़ना होगा। आपके पास जितना अधिक संसार होगा, उसे पीछे छोड़ना उतना ही कठिन होगा (मत्ती १९:२४; मरकुस १०:२३)।

ग) हमें KOG देने की परमेश्वर की इच्छा का उल्लेख संपत्ति बेचने की आज्ञा के साथ किया गया है (लूका १२:३२,३३)।

ग. KOG परमेश्वर केंद्रित है। यह मनुष्य केंद्रित नहीं है।

१) मनुष्य को आज्ञाकारी होना चाहिए। उसे प्रचार करना चाहिए।

२) हालांकि, मुख्य घटक मिट्टी है। परमेश्वर मिट्टी तैयार करते हैं जिससे वृद्धि होती है (मरकुस ४:३०-३२—मरकुस ४:२० पर भी विचार करें)।

टिप्पणियाँ -

घ. KOG आगे बढ़ता है और बढ़ता ही चला जाता है।

१) "तेरा राज्य आये" का अनुवाद "तेरा राज्य आ रहा है और आता रहेगा" हो सकता है (मत्ती ६:१०)।

२) KOG आगे बढ़ता है (मत्ती ११:१२)।

३) KOG शुरुआत में छोटा लगता है। हालाँकि, यह सबसे बड़ा हो जाता है (मत्ती १३:३१,३२)।

४) KOG छिपा हुआ है। फिर भी, जैसे आटे में खमीर आटे को फुला देता है, इसी प्रकार परमेश्वर का राज्य बढ़ता है (मत्ती १३:३३)।

ङ. KOG अचानक दिखाई देगा। यह पलक झपकते ही दिखाई देगा (लूका १७:२२-२४)।

च. KOG सामर्थ्य के साथ आएगा (मरकुस ९:१)

छ. KOG एकीकृत है।

१) राज्य एकता के अनुसार खड़े होते हैं (मत्ती १२:२५,२६)।

२) यदि कोई राज्य स्वयं विभाजित हो जाता है तो वह टिक नहीं सकता (मरकुस ३:२४)।

४. KOG में कैसे प्रवेश करें। इसे कौन प्राप्त कर सकता है?

क. मूलभूत सिद्धान्त।

१) हम KOG में नहीं जाते हैं। KOG हमारे पास आता है। यह स्वयं को हमें प्रदान करता है (मत्ती ६:१०)।

२) परमेश्वर या KOG के शासन की उपलब्धता सभी लोगों के लिए समान है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ हैं या आपने कब आरम्भ किया है (मत्ती २०:१-१६)।

३) KOG उन लोगों को विरासत में मिला है जिनके लिए इसे संसार की नींव से तैयार किया गया है (मत्ती २५:३४)।

टिप्पणियाँ -

ख. प्रवेश कैसे करें।

१) सबसे पहले, KOG को देखने के लिए आपको आत्मा के द्वारा नया जन्म लेना होगा (यूहन्ना ३:३,६)।

२) KOG की बात सुनना ही काफी नहीं है। इसे समझना भी आवश्यक है (मत्ती १३;१९)।

३) प्रवेश करने के लिए आपको कुंजियों की आवश्यकता होती है। KOG की कुंजी अंगीकार और पश्चाताप है। ध्यान दें कि मत्ती १६:१९ का संदर्भ पतरस का मसीह का अंगीकार है। यह भी ध्यान दें कि मत्ती १८:१८ में बाँधने और खोलने का संदर्भ अंगीकार और पश्चाताप है। KOG में प्रवेश करने के लिए हमें अंगीकार और पश्चाताप की कुंजियों का उपयोग करना चाहिए।

क) उदाहरण के लिए, चुंगी लेने वाले और वेश्याएं फरीसियों से पहले KOG में प्रवेश करेंगे क्योंकि उन्हें पाप का दोषी ठहराया गया था और फरीसियों को नहीं (मत्ती २१:२८-३२)।

ख) उन्होंने कुंजियों (अंगीकार और पश्चाताप) का इस्तेमाल किया लेकिन फरीसियों ने (अच्छे कार्यों के साथ) दरवाज़े को तोड़ने की कोशिश की।

ग. जो प्रवेश नहीं करेंगे।

१) हर कोई जो हे प्रभु कहता है वह KOG में प्रवेश नहीं करेगा (मत्ती ७:२१)।

२) धनी लोगों के लिए KOG में प्रवेश करना कठिन है (मत्ती १९:२४)।

३) जो पाप के दोषी नहीं हैं और जो पश्चाताप नहीं करते वे KOG में प्रवेश नहीं करेंगे (मत्ती २१:२८-३२)।

४) जो लोग इसके आगमन के लिए तैयार और तत्पर नहीं हैं, वे KOG में प्रवेश नहीं करेंगे (मत्ती २५:१-१३)।

५) जो लोग परमेश्वर द्वारा दी गई आशीषों का उपयोग दूसरों को आशीर्वाद देने के लिए नहीं करते और आशीषों को बढ़ाते नहीं हैं, वे KOG में प्रवेश नहीं करेंगे (मत्ती २५:१४-३०)।

टिप्पणियाँ -

६) दाऊद के राज्य को KOG के रूप में परिभाषित और समझा जाना चाहिए। इसे एक राजनीतिक या राष्ट्रवादी साम्राज्य के रूप में नहीं समझा जा सकता है। बहुत से यहूदी KOG से चूक गए क्योंकि वे अपने स्वयं के राज्य की तलाश में थे (मरकुस ११:१० को इस एहसास के आलोक में देखें कि इन्हीं लोगों ने एक सप्ताह बाद यीशु को अस्वीकार कर दिया था – लूका १९:११ पर भी विचार करें)।

७) कपटी अगुवे अपने अनुयायियों को स्वयं के साथ-साथ KOG में प्रवेश करने से रोकते हैं (मत्ती २३:१३)।

घ. KOG में प्रवेश करने वालों की विशेषताएँ।

१) जो मन के दीन हैं (विनम्र, स्वयं से खाली) KOG प्राप्त करते हैं (मत्ती ५:३)।

२) जो आज्ञाकारी हैं वे KOG में प्रवेश करेंगे (मत्ती ७:२१)।

३) बलपूर्वक लोग KOG में प्रवेश करते हैं (मत्ती ११:१२; लूका १६:१६)। उन चीज़ों के विरुद्ध बल का इस्तेमाल किया जाना चाहिए जो KOG (शैतान, दुनिया, हमारा माँस) का विरोध करते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु के शारीरिक होने के दिनों में हमारे पास जो सशक्त चित्र है, उस पर ध्यान दें (इब्रानियों ५:७)। यीशु आकस्मिक रूप से अपनी देह के विरुद्ध नहीं आते। यह गहनता का चित्रण है।

४) हमें KOG में प्रवेश करने के लिए बालकों के समान होना चाहिए (मत्ती १८:३)। हमारे पास एक बालक के समान पवित्रता, सरलता और विश्वास होना चाहिए (मत्ती १९:१४ और लूका १८:१७ भी देखें)।

५) जो तैयार और तत्पर हैं वे KOG में प्रवेश करेंगे (मत्ती २५:१-१३)।

६) जो लोग KOG में प्रवेश करते हैं, वे उन आशीषों का उपयोग करते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें फल उत्पन्न करने के लिए दी हैं (मत्ती २५:१४-३०)।

७) जो लोग यीशु के साथ हैं ("उसके बारे में") उन्हें KOG के रहस्य की समझ दी गई है (मरकुस ३:३२,३४; ४:१०,११ का अध्ययन करें)। उदाहरण के लिए, पौलुस का मसीह के साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। इस प्रकार, उसे समझ प्राप्त हुई (इफिसियों ३:४)।

८) जो KOG में हैं वे परमेश्वर के सेवक हैं। वे, किसानों की तरह, कार्यरत हैं। वे अपना कार्य करते हैं, भले ही वे परिणाम नहीं दे सकते। वे ऐसे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए (मरकुस ४:२६-२९)।

टिप्पणियाँ -

ङ. प्रवेश के लिए मानक।

१) KOG में प्रवेश करने के लिए धार्मिकता धर्म से बढ़कर होनी चाहिए (मत्ती ५:२०)। धर्म, पुरुषों के शासन पर केंद्रित है। धार्मिकता, परमेश्वर के शासन (KOG) पर केंद्रित है।

२) KOG को अत्यधिक समर्पण, प्रतिबद्धता और निष्ठा की आवश्यकता है (लूका ९:६२)।

५. KOG के प्रति उचित प्रतिक्रिया।

क. KOG की निकटता की प्रतिक्रिया पश्चाताप करना है (मत्ती ३:२)।

ख. KOG के प्रति प्रतिक्रिया इस संसार की चीजों को छोड़ देना है।

१) इसलिए एक धनी व्यक्ति के लिए KOG में प्रवेश करना कठिन है (मरकुस १०:२३)।

२) KOG में रहना इस बात का आश्वासन देता है कि हमारी आवश्यकताएँ पूरी होंगी (लूका १२:३१)। हालाँकि, यह आवश्यक है कि हम इस संसार की अनावश्यक संपत्ति को छोड़ दें (लूका १२:३२,३३)।

३) इसमें अपने परिवार के सदस्यों को छोड़ना भी शामिल हो सकता है (लूका १८:२९,३०)।

लेखक की टिप्पणी:

जब कोई मुसलमान व्यक्ति मसीह को स्वीकार करता है तो उसे अकसर परिवार से बहिष्कृत कर दिया जाता है। उसके बाद उसके पास चुनने का विकल्प होता है। क्या वह अपने परिवार को छोड़ेगा या वह मसीह को छोड़ेगा? मुझे ऐसा नहीं लगता कि इस वचन का सेवाकाई करने के लिए अपने परिवार को छोड़ देने से कुछ लेना-देना है (उदाहरण के लिए, पत्नी और बच्चों के बिना ५ वर्ष के लिए संसार के दूसरे हिस्से में जाना)। यह १ तीमुथियुस ५:८ जैसे अन्य वचनों के साथ असंगत होगा।

टिप्पणियाँ -

ग. KOG के प्रति प्रतिक्रिया परमेश्वर ने आपको जो कुछ दिया है उसका एक अच्छा भण्डारी होना है (मत्ती २५:१४-३०)।

घ. KOG के प्रति प्रतिक्रिया बीज बोना (KOG की गवाही देना और प्रचार करना) और उचित समय पर हंसिया लगाना है- सुसमाचार प्रचार करना/चेले बनाना (मरकुस ४:२६-२९)।

ङ. KOG के प्रति प्रतिक्रिया यह है कि इसकी तलाश की जाए, इसकी प्रतीक्षा की जाए और इसके लिए तैयारी की जाए (मत्ती २५:१-१३)।

६. KOG का महत्व।

क. KOG में होना आपको इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान पर रखता है। यहाँ तक कि KOG में सबसे छोटा सबसे बड़ा है (मत्ती ११:११)। यह परमेश्वर की छुटकारे की ऐतिहासिक योजना के संबंध में स्थितिगत महत्व के अर्थ में—अर्थात्, प्रगतिशील प्रकाशन के अर्थ में महत्वपूर्ण है।

ख. KOG कीमती है। हमारे पास जो कुछ भी है उन सबसे कीमती यही है (मत्ती १३:४४,४५)।

१) KOG ही हमारी एकमात्र इच्छा होनी चाहिए (मत्ती ६:३३)। इसलिए हमारा मन सरल होना चाहिए। अर्थात् हमें एकाग्रचित्त होना चाहिए।

२) KOG के महत्व को प्रचार करने की प्राथमिकता में देखा जाता है।

क) यीशु ने अपना अधिकांश समय एक शहर से दूसरे शहर जाने और KOG का प्रचार करने में बिताया (लूका ८:१)।

ख) अंत तब तक नहीं आएगा जब तक कि KOG का सुसमाचार सभी राष्ट्रों को नहीं सुनाया जाता (मत्ती २४:१४।

७. KOG में सबसे बड़ा।

क. सबसे पहले, हमें यह समझना चाहिए कि इस क्षेत्र में परमेश्वर संप्रभु है। KOG के भीतर प्रत्येक स्थान परमेश्वर द्वारा तैयार किया गया है। यह यहाँ पृथ्वी पर हमारे कार्यों से जुड़ा है (मत्ती २०:२१-२३)।

ख. KOG में संसार की महानता की समझ के सम्बन्ध में चीज़ें विपरीत हैं। सबसे बड़ा वह नहीं जो मालिक है, बल्कि वह है जो दास है (मत्ती २०:२५-२७)।

टिप्पणियाँ -

ग. KOG में सबसे बड़ा वह है जो स्वयं को एक बालक की तरह दीन करता है (मत्ती १८:४)। वह अपने पिता के प्रति कपटी नहीं है। उसे अपने पिता पर भरोसा है। वह हर चीज़ के लिए अपने पिता पर निर्भर है। उसे अपने पिता से स्नेह की बहुत आवश्यकता और इच्छा है। वह उसके साथ समय बिताना चाहता है।

घ. पहाड़ पर उपदेश इस बात का विवरण है कि कैसे यीशु ने व्यवस्था को पूरा किया (भरा, समझाया, पूरा किया) (मत्ती ५:१७)। इस प्रकार, पहाड़ पर दिए गये उपदेश को सिखाना KOG (परमेश्वर के शासन) में सबसे बड़ा होना है क्योंकि पहाड़ पर दिया गया उपदेश परमेश्वर का नियम है (मत्ती ५:१८,१९)।

८. KOG बलिदान और उत्पीड़न से जुड़ा हुआ है।

क. बलिदान (देखें लूका १८:२९,३० और लूका १२:३२,३३)।

ख. उत्पीड़न।

१) आपके जीवन में परमेश्वर के शासन (KOG) का प्रमाण (परमेश्वर के शासन से हमेशा संसार को तकलीफ होती है) उत्पीड़न है (मत्ती ५:१०)।

२) यूहन्ना १५:२० और २ तीमुथियुस ३:१२ पर भी विचार करें।

९. अब KOG के अस्तित्व का प्रमाण (पहले से ही राज्य है)।

क. सामर्थ्य।

१) यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि KOG सामर्थ्य के साथ आएगा। यह भविष्यवाणी पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई (मरकुस ९:१)।

२) KOG की उपस्थिति का सीधा सम्बन्ध आश्चर्यकर्मों के कार्य और परमेश्वर की सामर्थ्य से है (मत्ती १०:७,८—यहूदियों की सेवकाई)।

३) एक ही बात एक अलग स्थिति में सत्य है (लूका १०:९—अन्यजातियों में सेवकाई)।

टिप्पणियाँ -

ख. विजय।

१) KOG की उपस्थिति शैतान पर परमेश्वर के शासन द्वारा सिद्ध होती है (लूका ११:२०; मत्ती १२:२६-२९)।

२) साथ ही, KOG की उपस्थिति इस तथ्य से सिद्ध होती है कि परमेश्वर का राज्य शैतान के राज्य के साथ-साथ बढ़ता है । अन्त में उन्हें अलग कर दिया जाएगा, लेकिन अभी के लिए हम अलग-अलग फलों से अंतर जान सकते हैं (मत्ती १३:२४-३० और मत्ती १३:४८)।

१०. KOG के भविष्य का विवरण (राज्य अभी तक नहीं है)।

क. यह अभी तक अपनी पूर्णता में नहीं आया है।

१) न्याय का दिन (लूका १०:१४) "उस दिन" (पद १२) के साथ जुड़ा हुआ है। "वह दिन" पद ११ के साथ जुड़ा हुआ है और इसका अर्थ है कि KOG निकट आ गया है, लेकिन अभी तक अपनी पूर्णता में नहीं आया है। यह न्याय के दिन अपनी पूर्णता में आएगा।

२) KOG तुरंत (पूरी तरह से) प्रगट नहीं होता है। यीशु को पहले जाना होगा। तब वह पूरे राज्य के साथ लौटेंगे (लूका १९:११-२७)।

३) याद रखें: KOG के २ आगमन हैं क्योंकि राजा के २ आगमन हैं।

ख. KOG को शैतान के राज्य से अलग कर दिया जाएगा। ऐसा भविष्य में होगा (मत्ती १३:२४-३०)।

ग. भविष्य की एक दावत है जो KOG से जुड़ी हुई है।

१) स्वर्ग में भोजन करने की जगह होगी। लोग हर जगह से आएँगे (मत्ती ८:११)। वे हर दिशा से आएँगे। वे इब्राहीम, इसहाक, याकूब और भविष्यद्वक्ताओं के साथ मेज़ पर भोजन करेंगे (लूका १३:२८,२९)।

२) यीशु फिर से तब तक दाखरस नहीं पियेंगे जब तक कि वह उसे KOG में न पी लें (मत्ती २६:२९; मरकुस १४:२५)।

टिप्पणियाँ -

३) यीशु फसह को फिर से तब तक नहीं खाएँगे जब तक कि वह KOG में पूरा न हो जाए (लूका २२:१६)।

४) पिता यीशु को KOG देते हैं। जब यीशु कहते हैं कि प्रेरित उनके राज्य में भोजन करेंगे, तब वह भविष्य को संदर्भित करते हैं। वे सिंहासन पर विराजमान होंगे और इस्राएल के १२ गोत्रों का न्याय करेंगे (लूका २२:२९,३०)।

घ. KOG में स्थिति भविष्य की घटना के संदर्भ में कही जाती है (मत्ती २०:२१-३०)। ध्यान दें कि "राज्य अभी तक नहीं" में आपकी स्थिति "पहले से ही राज्य" में आपके कार्यों से सीधे सम्बंधित है।

ङ. KOG में प्रवेश भविष्य में रखा गया है (मरकुस ९:४३-४५)।

११. यहूदियों के सम्बन्ध में KOG का इतिहास।

क. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के समय तक परमेश्वर के राज्य को व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के शब्दों के माध्यम से देखा गया था। फिर KOG का प्रचार किया जाता है (लूका १६:१६)।

ख. अरिमतिया का यूसुफ KOG की प्रतीक्षा कर रहा था (लूका २३:५१)।

ग. यीशु की मृत्यु से पहले लोगों ने सोचा था कि KOG तुरंत प्रगट होने वाला था (लूका १९:११)।

घ. उन्होंने ऐसा इसलिए सोचा क्योंकि वे एक राजनीतिक, राष्ट्रीय राज्य की तलाश में थे। दाऊद के राज्य को एक यहूदी राज्य के रूप में देखा गया था (मरकुस ११:१०)। वे एक ऐसे KOG को स्वीकार नहीं कर सकते थे जो सभी मानव जाति के छुटकारे के लिए बनाया गया था।

ङ. इस प्रकार, यहूदियों ने KOG को अस्वीकार कर दिया और इसे अन्यजातियों के लिए खोल दिया गया (मत्ती २२:२-१४)।

१) इसे यहूदियों से छीनकर अन्यजातियों को दे दिया गया (मत्ती २१:४३)।

२) सामान्य तौर पर, यहूदी अविश्वास के कारण KOG में प्रवेश नहीं करेंगे (मत्ती ८:१२)।

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -

हम कई विवादास्पद राज्य विषयों पर चर्चा करके पाठ्यक्रम का समापन करेंगे:

चर्चा विषय #१

KOG पर यीशु की शिक्षा पूरी तरह से झूठी शिक्षा के विरुद्ध है जो परमेश्वर से आप जो कुछ भी चाहते हैं उसे प्राप्त करने और महान धन और संपत्ति प्राप्त करने पर केंद्रित है। KOG का उद्घोषक मुलायम कोमल वस्त्र नहीं पहनता (मत्ती ११:८)। वह ऊंट के रोम का वस्त्र पहनता है और टिड्डियों को खाता है (मत्ती ३:४)।

KOG, धन और संपत्ति होने की विशेषता नहीं है। वास्तव में, इसका संबंध संपत्ति बेचने और गरीबों को देने से अधिक है (लूका १२:३१-३३)।

KOG की विशेषता बलिदान है। यह आराम से संबंधित नहीं है (लूका १८:२९,३० देखें; लूका ६:२०-२६; २ तीमुथियुस २:३,४)। कई बार शिक्षक यह कहकर अपनी स्थिति का बचाव करते हैं कि मसीही "**राजा** की संतानें" हैं। इसलिए हमें **राजा** का जीवन जीना चाहिए। दुर्भाग्य से, वे भूल जाते हैं कि जिस **राजा** की वे बात कर रहे हैं, वह उन लोगों की बात करते हैं जो उसका अनुसरण करेंगे, उस समय वह बलिदान की बात कर रहा है, आराम की नहीं (मत्ती ८:१९,२०)।

चर्चा विषय #२

KOG पर यीशु की शिक्षा झूठे "विजय के धर्मशास्त्र" के विरुद्ध है।

कुछ धर्मशास्त्री यह सिखाने की कोशिश करते हैं कि एक मसीही विश्वासी के पास कभी भी समस्या नहीं होनी चाहिए। उसकी कभी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। मसीहियों को हमेशा विजय में रहना चाहिए। प्रत्येक क्षण को पुनरुत्थान में जीना है। क्रूस का कोई जीवन नहीं है। हालाँकि, यीशु कहते हैं कि आपके जीवन में KOG का प्रमाण यह है कि आपको सताया जा रहा है (मत्ती ५:१०)। क्या इसका अर्थ यह है कि हम हार का जीवन जीते हैं? नहीं! इसका सीधा सा अर्थ है कि विजय के मार्ग में हमेशा क्रूस होता है।

चर्चा विषय #३

KOG पर यीशु की शिक्षा उन शिक्षाओं के विरुद्ध है जिनका अर्थ है कि मसीही जीवन आसान है। मत्ती ११:१२ के सम्बन्ध में हमने पहले जो चित्र चित्रित किया था, उसे याद रखें। मसीही जीवन एक गहन जीवन है। यह एक युद्ध है—पाप के विरुद्ध एक लड़ाई (इब्रानियों ५:७,८ और इब्रानियों१२:४ पर फिर से विचार करें)।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय #४

KOG पर यीशु की शिक्षा झूठी सार्वभौमवाद के विरुद्ध है। हमें मानवतावाद के जाल में नहीं फंसना है। मानवतावादी मनुष्य के भाईचारे की घोषणा करना चाहते हैं। यह अच्छा लगता है। यह लगभग मसीही लगता है। हालाँकि, यह बाइबिल से सम्बन्धित नहीं है। यीशु कई जगहों पर एकता की कमी के बारे में बात करते हैं जो उसका राज्य लाता है (उदाहरण के लिए, मत्ती १०:३४-३६)।

चर्चा विषय #५

KOG पर यीशु की शिक्षा चरम आर्मीनियाईवाद (मनुष्य की स्वेच्छा के बारे में गलतफहमी) के विरुद्ध है। हम KOG में नहीं जाते हैं। KOG हमारे पास आता है (मत्ती ६:१०)। हम परमेश्वर को नहीं चुनते। परमेश्वर हमें चुनते हैं (यूहन्ना १५:१६)। हम मनुष्य की स्वेच्छा से नहीं, बल्कि परमेश्वर से पैदा हुए हैं (यूहन्ना १:१३)।

चर्चा विषय #६

KOG पर यीशु की शिक्षा झूठे सिद्धान्त के विरुद्ध है जो धर्म पर आधारित है। बहुत से धार्मिक सिद्धांत मत्ती १६:१८ की गलतफहमी पर आधारित हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि कलीसिया पतरस पर नहीं बनी है। बल्कि यह पतरस के मसीह के अंगीकार पर बनायी गयी है। राज्य की कुंजी अंगीकार और पश्चाताप हैं।

चर्चा विषय #७

KOG पर यीशु की शिक्षा उन धर्मशास्त्रों के विरुद्ध है जो कहते हैं कि पहाड़ पर दिए गये उपदेश (मत्ती ५-७) आज के लिए प्रासंगिक नहीं है।

पहाड़ पर दिए गये उपदेश को मानना और उन्हें सिखाना (अब) KOG में सबसे बड़ा होना है (मत्ती ५:१९)।

सुसमाचार और राज्य

चर्चा विषय #८

KOG पर यीशु की शिक्षा सहस्राब्दी के बाद की स्थिति का पूरी तरह से खंडन करती है जो कहती है कि कलीसिया का युग KOG में आएगा। यह स्पष्ट है कि KOG बढ़ेगा। हालाँकि, यह भी स्पष्ट है कि शैतान का राज्य बढ़ेगा (मत्ती २४:१२)। ध्यान दें कि दोनों को खमीर के रूप में वर्णित किया गया है (मत्ती १३:३३ और मत्ती १६:६)। बाइबिल का चित्रण संसार का बेहतर होना नहीं है। बल्कि यह संसार में बदतर और बदतर होती जा रही है (उदाहरण के लिए मत्ती २४:१२) क्योंकि KOG एक ही समय में बढ़ता है। आइए हम यह भी दोहराएँ कि मनुष्य KOG की वृद्धि का कारण नहीं बनता है (मरकुस ४:२६-२९)। इसका मुख्य घटक मनुष्य के कार्यों में नहीं बल्कि परमेश्वर की संप्रभुता में पाया जाता है (मरकुस ४:३०-३२)।

KOG इस संसार का नहीं है। यह प्रगट रूप से नहीं है। यह आत्मिक है (यूहन्ना १८:३६)। चूंकि KOG इस संसार का नहीं है, इसलिए इस संसार में इसकी स्थापना नहीं होगी। यह अपने स्वयं के दायरे में स्थापित है- आत्मिक क्षेत्र (ध्यान दें कि यीशु कहते हैं कि KOG प्रगट संकेतों के साथ नहीं आएगा-वह कहते हैं कि KOG हमारे भीतर है-अर्थात् यह आत्मिक है (लूका १७:२०,२१)। चूंकि KOG इस संसार का नहीं है, यह भौगोलिक, राजनीतिक या आर्थिक अर्थों में देखने योग्य नहीं होगा। हम इनमें से किसी भी क्षेत्र में एक स्थान पर नहीं आएंगे और कहेंगे "यहाँ KOG है" (लूका १७:२०,२१)।

KOG इस संसार के लोकों के बीच में देखने के लिए कुछ नहीं है (देखो, यह वहाँ है) क्योंकि यह एक बाहरी राज्य नहीं, बल्कि आंतरिक राज्य है (लूका १७:२१)। यह एक आत्मिक राज्य है न कि भौतिक राज्य। इस प्रकार, KOG खाना-पीना नहीं बल्कि धार्मिकता और पवित्र आत्मा में शान्ति और आनन्द है (रोमियों १४:१७)। यह शान्ति और धार्मिकता आवश्यक नहीं कि बाहरी शान्ति या न्यायपूर्ण समाज से संबंधित हो। वास्तव में, आप KOG के जितने करीब आते हैं, उतना ही अधिक उत्पीड़न का आप अनुभव करते हैं। याद रखें, यीशु मिलाप करने नहीं, बल्कि तलवार चलाने आए थे (मत्ती १०:३४)। वह अपने राज्य में आंतरिक शान्ति का आश्वासन देते हैं क्योंकि उनका एक आत्मिक राज्य है। हालाँकि, वह बाहरी शान्ति का आश्वासन नहीं देते क्योंकि उनका कोई भौतिक राज्य नहीं है। इस प्रकार, शारीरिक तलवार आत्मिक राज्य के लोगों के विरुद्ध आती है (इब्रानियों ११:३७)। साथ ही आत्मिक तलवार का प्रयोग आत्मिक राज्य के लोग करते हैं (इफिसियों ६:१७)। हाँ, आत्मिक KOG शैतान के भौतिक राज्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। हालाँकि, सिर्फ इसलिए कि एक बेहतर समाज होने की संभावना है, इसका मतलब यह नहीं है कि समाज KOG है। यह KOG को संसार के बराबर बना देगा। फिर भी KOG और संसार हमेशा एक दूसरे से टकराते रहते हैं। वे हमेशा एक-दूसरे के विरोधी होते हैं।

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियाँ -

अंत में, हमें यह महसूस करना चाहिए कि KOG कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मनुष्य द्वारा अस्तित्व में लाया गया है। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे मनुष्य बना सकता है और कह सकता है "देखो, यह यहाँ है"। अंतिम दिनों में ऐसे लोग होंगे जो KOG को देखने की महान इच्छा का लाभ उठाएँगे। वे यह तर्क देने की कोशिश करेंगे कि KOG को भौतिक क्षेत्र में देखा जा सकता है। वे कहेंगे कि मनुष्य इसे बना सकता है। हालाँकि, बाइबल स्पष्ट है। उनका पालन करने के लिए मना किया गया है। यह नहीं है कि कैसे KOG की स्थापना की जाएगी। यह परमेश्वर द्वारा पलक झपकते ही स्थापित किया जाएगा (लूका १७:२२-२४)।

याद रखें: युगों के बाद की अंतविद्या यहूदियों की सबसे बड़ी भूल थी। उन्होंने सोचा कि भौतिक क्षेत्र में KOG की स्थापना की जाएगी। वे एक राजनीतिक, आर्थिक और राष्ट्रवादी राज्य की तलाश में थे (लूका १९:११)। कलीसिया में उत्तर सहस्राब्दी सोच के अस्तित्व के साथ, मसीही उसी त्रुटि के प्रति संवेदनशील हैं।

सुसमाचार और राज्य

सुसमाचार और राज्यः अंतिम टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ -

[1]जॉर्ज एल्डन लैड, द गॉस्पेल एंड द किंगडम, डब्ल्यूएम. बी एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन। पुनर्मुद्रित, नवम्बर १९८८।

सुसमाचार और राज्य

टिप्पणियाँ -